



QIM की 82वीं वर्षगांठ

प्रलिम्स के लिये:

[अगस्त क्रांति दिवस](#), [भारत छोड़ो आंदोलन \(QIM\)](#), [मतिर राष्ट्र](#), [करपिस मशिन \(1942\)](#), [भारत छोड़ो प्रस्ताव](#), [नेशनल हेराल्ड](#), [वायसराय लनिलिथिगो](#), [AITUC](#), [CSP](#), [AIKS](#), [फॉरवरड ब्लॉक](#), [सत्याग्रह](#), [सवनिय अवज्जा आंदोलन](#), [शमिला सम्मेलन](#)।

मेन्स के लिये:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारत छोड़ो आंदोलन की भूमिका एवं महत्त्व।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

[अगस्त क्रांति दिवस](#) भारत में प्रतिवर्ष 8 अगस्त को मनाया जाता है। वर्ष 2024 में, [भारत छोड़ो आंदोलन \(QIM\)](#) की 82वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है।

- यह महात्मा गांधी के नेतृत्व में वर्ष 1942 में QIM के ऐतिहासिक शुभारंभ का स्मरण कराता है।

QIM क्या था?

- परिचय:** यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिये भारत के संघर्ष में एक महत्त्वपूर्ण क्षण था, जिसमें भारत से ब्रिटिश सेना की तत्काल वापसी का आह्वान किया गया था।
 - इसका उद्देश्य ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध [अहसिक सवनिय अवज्जा अभियान](#) में भारतीयों को संगठित करना था।
 - अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, इसने [ब्रिटिश जनता](#) का [सहानुभूतिपूर्ण समर्थन](#) और [द्वितीय विश्व युद्ध](#) के दौरान [मतिर राष्ट्रों](#) की शक्तियों से दबाव आकर्षित किया।
- QIM प्रारंभ करने के कारण:**
 - करपिस मशिन की विफलता (वर्ष 1942):** [करपिस मशिन](#) ने संवैधानिक प्रगत पर ब्रिटिश के अपरिवर्तित रवैये को उजागर किया और यह स्पष्ट कर दिया कि अब और चुप्पी ब्रिटिशों के परामर्श के बिना भारतीयों के भाग्य का निर्णय करने के अधिकार को स्वीकार करने के समान होगी।
 - इसने पूर्ण स्वराज के बजाय [प्रभुत्व का दर्जा](#) देने की पेशकश की। इसने प्रान्तों को [पृथक् होने का अधिकार](#) प्रदान किया जो [राष्ट्रीय एकता के सिद्धांत के विरुद्ध](#) था।
 - द्वितीय विश्व युद्ध का आर्थिक प्रभाव:** [बढ़ती कीमतों](#) और [चावल, नमक](#) आदिकी कमी के कारण लोगों में असंतोष था। जहाँ खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों ने [गरीबों को प्रभावित](#) किया, वहीं [अमीरों को अत्यधिक लाभ](#) कर से [नुकसान](#) हुआ। यह घोर कुप्रबंधन तथा उद्देश्यपूर्ण मुनाफाखोरी के कारण और भी बढ़ गया।
 - दक्षिण-पूर्व एशिया से ब्रिटिशों का जल्दबाजी में नष्कासन:** [जापानी आक्रमण](#) के बाद मलाया और बर्मा से लौटने वाले शरणार्थियों ने [दक्षिण-पूर्व एशिया](#) में ब्रिटिश सत्ता के पतन एवं ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भारतीय शरणार्थियों को छोड़ देने की सूचना दी।
 - इससे यह भय उत्पन्न हो गया कि यदि जापान ने आक्रमण किया तो ब्रिटिश इसी प्रकार भारत को छोड़ सकता है।
 - ब्रिटिश पतन की आशंका:** मतिर राष्ट्रों की हार और दक्षिण-पूर्व एशिया एवं बर्मा से ब्रिटिशों की वापसी की खबरों ने भारत में लोगों को यह विश्वास दिलाया कि [ब्रिटिश सत्ता जल्द ही समाप्त होने वाली](#) है।
 - जापानी आक्रमण की आशंका:** नेताओं ने महसूस किया कि संघर्ष शुरू करना आवश्यक है क्योंकि उनका मानना था [कलिंगों का मनोबल](#) गरि रहा है और यदि जापान ने आक्रमण किया तो वे शायद [विरोध](#) न करें।
- भारत छोड़ो संकल्प:**
 - कॉंग्रेस कार्यसमिति ने [14 जुलाई 1942 को](#) वर्धा में ['भारत छोड़ो' संकल्प](#) को अपनाया।
 - [अखिल भारतीय कॉंग्रेस समिति \(AICC\)](#) ने [8 अगस्त 1942 को बॉम्बे के गोवालिया टैंक](#) में कुछ संशोधनों के साथ इस संकल्प को स्वीकार कर लिया और [गांधीजी](#) को संघर्ष का नेता नामित किया गया।
 - बैठक में ये संकल्प भी लिये गए:
 - भारत में [ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने की मांग](#)।
 - [स्वतंत्र भारत की सभी प्रकार के फासीवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्वयं की रक्षा](#) करने की प्रतिबद्धता।

की घोषणा करना।

- ब्रिटिश शासन के वापसी के बाद भारत की एक अनंतिम सरकार का गठन करना।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ सवनीय अवज्ञा आंदोलन को स्वीकृत देना।
- गांधीजी को संघर्ष का नेता नामति कयिा गया।
- इस अवसर पर, गांधीजी ने अपना प्रसदिध "करो या मरो" का नारा दयिा, जसिमें उनहोंने तरक दयिा कि "?? ?? ?? ????? ??
???????????? ???? ????? ?? ?? ????????? ????? ?? ???? ?????; ?? ????? ????????? ?? ?????
?????? ?? ????? ????????? ?????? ?????????????"

सरकार ने QIM के प्रसार पर क्या प्रतिक्रिया दी?

■ आंदोलन का प्रसार:

- जनता उग्र हो गई: आम जनता ने सत्ता के प्रतीकों का वरिध व उनपर हमला कयिा। वरिध के कारण कई सत्याग्रहियों की गरिफ्तारी हुई, पुल उडा दयिे गए, रेल की पटरियाँ हटा दी गई और टेलीग्राफ लाइनें काट दी गई।
- भूमगित गतविधि: भूमगित गतविधि करने वाले मुख्य वयकत्व राममनोहर लोहयिा, जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता और आर.पी. गोयनका थे। उषा मेहता ने बॉम्बे में एक भूमगित रेडयिो शुरू कयिा।
 - प्रमुख नेताओं की गरिफ्तारी के कारण, एक युवा और तब तक अपेक्षाकृत अज्ञात अरुणा आसफ अली ने 9 अगस्त को AICC सत्र की अध्यक्षता की और ध्वजारोहण कयिा, बाद में कॉन्ग्रेस पार्टी पर प्रतबिध लगा दयिा गया।
- समानांतर सरकारें: बलयिा (उत्तर प्रदेश), तामलुक (बंगाल) और सतारा (महाराष्ट्र) में समानांतर सरकारें स्थापति की गई।
- जन भागीदारी की सीमा: युवा, महिलाएँ, श्रमकि और कसिान अग्रणी रहे।

■ ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया:

- 9 अगस्त, 1942 की सुबह कॉन्ग्रेस के सभी शीर्ष नेताओं को गरिफ्तार कर लयिा गया और अज्ञात स्थानों पर ले जाया गया।
 - इस घटना ने लोगों में तुरंत प्रतिक्रिया उत्पन्न की। देश के वभिनिन भागों में अधिकारियों के साथ झड़पें, हड़तालें, सार्वजनिक प्रदर्शन और जुलूस निकाले गए।
- सरकार ने प्रेस पर प्रतबिध लगा दयिा। समाचार पत्र नेशनल हेराल्ड (National Herald) और साप्ताहकि पत्रकि हरजिन (Harijan) ने संघर्ष की पूरी अवधि के लयिे प्रकाशन बंद कर दयिा, जबकि अन्य ने कम अवधि हेतु प्रकाशन बंद कर दयिा।
- आंदोलनकारी भीड़ पर लाठीचार्ज कयिा गया, आँसू गैस के गोले छोड़े गए और गोलयिाँ चलाई गईं। मरने वालों की अनुमानति संख्या 10,000 थी।
 - सेना ने कई शहरों पर कब्जा कर लयिा और पुलसि तथा गुप्तचर सेवा सर्वोच्च हो गयी।
- वदिरोही गाँवों पर भारी जूरमाना लगाया गया तथा कई गाँवों में सामूहकि कोड़े मारे गए।

QIM के दौरान समानांतर सरकारें

- बलयिा, उत्तर प्रदेश: इसकी स्थापना चित्तू पांडे ने की थी और यह लोगों को स्वास्थय सेवा, शकिषा तथा अन्य सेवाएँ प्रदान करती थी।
- सतारा, महाराष्ट्र: इसे "प्रतिसरकार" के नाम से जाना जाता है, इसे वाई. बी. चव्हाण, नाना पाटलि और अन्य नेताओं द्वारा स्थापति कयिा गया था। 'गांधी वविाह' आयोजति कयिे गए थे।
- तामलुक, बंगाल: इसे ताम्रलपित जातीय सरकार के नाम से जाना जाता था और इसकी स्थापना अंबकिा चक्रवर्ती ने की थी।

क्या QIM एक स्वतःस्फूर्त वस्फोट था या एक संगठित आंदोलन?

■ QIM की सहज प्रकृति:

- वायसरय लनिलिथगो (Viceroy Linlithgow) ने इसे "1857 के बाद का अब तक का सबसे गंभीर वदिरोह" बताया।
- यह हसिक और पूरी तरह से अनयित्तरति था, कयोंकि इसके शुरू होने से पहले ही कॉन्ग्रेस नेतृत्व का पूरा उच्च वर्ग सलाखों के पीछे था।
- इसलयिे इसे "स्वतःस्फूर्त क्रांति" भी कहा जाता है, कयोंकि "कोई भी पूर्व-नरिधारति योजना ऐसे तात्कालकि और एकसमान परणिाम उत्पन्न नहीं कर सकती थी"।

■ QIM की संगठित प्रकृति:

- उग्रवादी आंदोलन: पछिले दो दशकों में, ऑल इंडयिा ट्रेड यूनयिन कॉन्ग्रेस (All India Trade Union Congress- AITUC), कॉन्ग्रेस सोशलसि्ट पार्टी (Congress Socialist Party- CSP), ऑल इंडयिा कसिान सभा (All India Kisan Sabha- AIKS) और फॉरवर्ड ब्लॉक जैसे कॉन्ग्रेस से संबद्ध समूहों के नेतृत्व में उग्रवादी जन आंदोलनों ने इस तरह के संघर्ष के लयिे मंच तैयार कयिा था।
- बारह सूतरी कार्यक्रम: 9 अगस्त, 1942 से पहले, कॉन्ग्रेस नेताओं ने एक बारह सूतरी कार्यक्रम का मसौदा तैयार कयिा जसिमें गांधीवादी सत्याग्रह पद्धति, औद्योगकि हड़ताल, रेलवे और टेलीग्राफ व्यवधान, कर अस्वीकार तथा एक समानांतर सरकार की स्थापना शामिल थी।
- पछिली तैयारी: सवनीय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) में, जबकि गांधीजी ने दांडी मार्च और नमक कानून के उल्लंघन के साथ संघर्ष की शुरुआत की, स्थानीय नेताओं तथा लोगों ने नरिणय लयिा कि कयिा भूमि राजस्व भुगतान रोकना है, वन कानूनों की अवहेलना करनी है, शराब की दुकानों पर धरना देना है या कार्यक्रम के अन्य पहलुओं को आगे बढ़ाना है।

- जनता के इन पछिले अनुभवों ने QIM को समृद्ध किया।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लामबंदी: पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में वर्ष 1942 में सर्वाधिक तीव्र गतिविधि वाले क्षेत्र वही थे जहाँ वर्ष 1937 के बाद से काफी लामबंदी और संगठनात्मक कार्य किया गया था।

QIM के सबक और महत्त्व क्या थे?

■ QIM से सबक:

- भारतीय जनता के लिये: 1942 में भारतीय जनता हेतु गांधीजी और कॉंग्रेस मुक्तिके प्रतीक थे, वैचारिक बाधा के स्रोत नहीं।
- कॉंग्रेस के लिये: सरकार द्वारा QIM के दमन से कॉंग्रेस के भीतर वामपंथी (फॉरवर्ड ब्लॉक के अनुयायियों की तरह) अपमानित हुए, जो सरकार के खिलाफ हसिक कार्रवाई की मांग कर रहे थे।
 - कॉंग्रेस, जिसमें अधिकांशतः उदारवादी और दक्षिणपंथी शामिल थे, लोकप्रिय उग्रवाद के सख्त खिलाफ थी तथा कानून एवं व्यवस्था की बहाली एवं संघर्ष का कूटनीतिक समाधान चाहती थी।
- अंग्रेजों के लिये: उन्हें एहसास हुआ कि युद्धकालीन आपातकालीन शक्तियों के बिना उग्रवादी जन आंदोलनों को प्रबंधित करना मुश्किल था।
 - युद्ध के बाद, बल द्वारा नियंत्रण बनाए रखना महंगा होगा, जिससे बातचीत और व्यवस्थित वापसी स्वीकार करने की इच्छा बढ़ेगी।

■ QIM का महत्त्व:

- इसने स्वतंत्रता की मांग को राष्ट्रीय आंदोलन के तत्काल एजेंडे में रखा। भारत छोड़ो आंदोलन के बाद पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था।
- कॉंग्रेस की गतिविधियों का मुख्य ध्येय रचनात्मक कार्य बन गया, जिसमें कॉंग्रेस तंत्र के पुनर्गठन पर विशेष ज़ोर दिया गया।
- कॉंग्रेस नेताओं को जून 1945 में शिमला सम्मेलन में भाग लेने के लिये रखा कर दिया गया। इसने अगस्त 1942 से चले आ रहे टकराव के दौर का अंत कर दिया।

नष्कर्ष

भारत छोड़ो आंदोलन (QIM) ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ दिखाया। ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा दमन के बावजूद, इस आंदोलन ने व्यापक जन समर्थन प्राप्त किया, जिसके कारण बड़े पैमाने पर वरिध प्रदर्शन हुए और समानांतर सरकारें बनीं। QIM ने स्वतंत्रता की मांग को तीव्र किया, जिससे अंततः भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का अंत हुआ।

???????? ???? ???? ???? :

Q. भारत छोड़ो आंदोलन (QIM) ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे उस बटु तक पहुँचा दिया जहाँ से वापसी संभव नहीं थी, जिससे पूर्ण स्वतंत्रता अपरहार्य हो गई?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

???????????????? :

प्रश्न. भारतीय इतिहास में 8 अगस्त, 1942 के संदर्भ में नमिनलखित कथनों में से कौन-सा सही है? (2021)

- भारत छोड़ो प्रस्ताव AICC द्वारा अपनाया गया था।
- अधिकारियों को शामिल करने के लिये वायसराय की कार्यकारी परिषद का विस्तार किया गया।
- सात प्रांतों में कॉंग्रेस के मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया।
- द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद क्रिप्स ने पूर्ण डोमिनियन स्थितिके साथ एक भारतीय संघ का प्रस्ताव रखा।

उत्तर: (a)

प्रश्न. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में नमिनलखित घटनाओं पर विचार कीजिये: (2017)

- रॉयल इंडियन नेवी में विद्रोह
- भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन

उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?

(a) 1 - 2 - 3

- (b) 2 - 1 - 3
(c) 3 - 2 - 1
(d) 3 - 1 - 2

उत्तर : (c)

प्रश्न . भारत छोड़ो आंदोलन किसके जवाब में शुरू किया गया था? (2013)

- (a) कैबिनेट मशिन योजना
(b) क्रिप्स प्रस्ताव
(c) साइमन आयोग की रिपोर्ट
(d) वेवेल योजना

उत्तर: (b)

प्रश्न . भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में, उषा मेहता को इन कारणों से जाना जाता है: (2011)

- (a) भारत छोड़ो आंदोलन के मद्देनजर गुप्त कॉंग्रेस रेडियो चलाना
(b) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना
(c) भारतीय राष्ट्रीय सेना की एक टुकड़ी का नेतृत्व करना
(d) पंडित जवाहरलाल नेहरू के तहत अंतरिम सरकार के गठन में सहायता करना

उत्तर: (a)

प्रश्न . वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा अवलोकन सही नहीं है? (2011)

- (a) यह एक अहसिक आंदोलन था
(b) इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था
(c) यह एक स्वतःस्फूर्त आंदोलन था
(d) इसने सामान्य रूप से श्रमिक वर्ग को आकर्षित नहीं किया

उत्तर: (b)

प्रश्न . स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, अरुणा असफ अली भूमिगत गतिविधिका एक प्रमुख महिला आयोजक थीं: (2009)

- (a) सवनिय अवज्जा आंदोलन
(b) असहयोग आंदोलन
(c) भारत छोड़ो आंदोलन
(d) स्वदेशी आंदोलन

उत्तर: (c)

प्रश्न . निम्नलिखित में से किस आंदोलन से "करो या मरो" का नारा जुड़ा है? (2009)

- (a) स्वदेशी आंदोलन
(b) असहयोग आंदोलन
(c) सवनिय अवज्जा आंदोलन
(d) भारत छोड़ो आंदोलन

उत्तर: (d)

?????

प्रश्न. स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा कीजिये, खासकर गांधीवादी चरण के दौरान। (2016)

प्रश्न . कनि प्रकारों से नौसैनिक विद्रोह भारत में अंग्रेजों की औपनिवेशिक महत्त्वाकांक्षाओं की शव-पेटिका में लगी अंतिम कील साबित हुआ था? (2014)

